फूलगोभी की उत्पादन तकनीक

गोभी वर्गीय सब्जियों में फूलगोभी एक महत्वपूर्ण फसल है। इसकी खेती मुख्य रूप से श्वेत, अविकसित व गठे हुए पुष्प पुंज (फूल) के लिए की जाती है। इसका प्रयोग सब्जी, सूप, अचार, सलाद, बिरयानी, पकौड़ा इत्यादि बनाने में किया जाता है। यह प्रोटीन, कैल्शियम, विटामिन–ए तथा सी का भी अच्छा स्रोत है।

उन्नतशील किस्में

(अ) अगेती किस्में

काशी कुवांरी (आई.आर.सी.–2)– इसकी बुवाई जून के दूसरे पखवाड़े से लेकर जुलाई के प्रथम सप्ताह तक कर सकते है इसके फूल गांठ व गुम्बदाकार होता है इसके फूल रोपाई के 55 से 65 दिन के बाद तैयार हो जाते हैं इसके फूलों का वजन 400 से 500 ग्राम तक होते हैं।

पूसा दीपाली– इसके पौधे सीधे खड़े, पत्तियाँ लम्बी, हरी तथा चिकनी होती है। फूल का रंग सफेद तथा मध्यम आकार का होता है। इसके फूल मध्य अक्टूबर में तैयार हो जाते हैं। पौधशाला में बीज की बुआई जुलाई तथा रोपण अगस्त महीने में करते हैं। इससे प्रति हैक्टेयर 100-150 कुन्तल तक पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

समर किंग– यह संकर प्रजाति है जो रोपाई के 60 से 65 दिन बाद तैयार हो जाती है। पौधशाला में बीज की बुआई जून और रोपण जुलाई में करते हैं। इसका फूल औसतन 500 ग्राम का होता है। इसकी रोपाई जनवरी में भी कर सकते हैं। इसके फूल अप्रैल तक बन सकते हैं। इसकी औसत उपज 125 कुन्तल प्रति हैक्टेयर है।

पावस– यह भी संकर प्रजाति है जो रोपाई के 60 से 65 दिन बाद तैयार हो जाती है। इसका फूल औसतन 700-800 ग्राम का गठा हुआ सफेद गुम्बदाकार होता है। पौधशाला में बीज की बुआई जून माह में और रोपण जुलाई में करते हैं। इसकी औसत उपज 125 कुन्तल प्रति हैक्टेयर है।

(ब) मध्यमी किस्में

इम्प्रूव्ड जापानी– पौधे सीधे तथा पत्तियाँ आसमानी रंग की होती हैं। पौधशाला में बीज को बोने का उचित समय अगस्त व रोपण का सितम्बर है। इसके फूल ठोस, आकार में बड़े तथा सफेद रंग के होते हैं। इसकी फसल नवम्बर के अन्त से दिसम्बर तक तैयार हो जाती है। इसकी औसत उपज 150 कुन्तल प्रति हैक्टेयर तक होती है।

सैरानो– यह एक संकर किस्म है जो रोपाई के 80-85 दिन में तैयार हो जाते है। पौधशाला में बीज बोने का समय अगस्त और पौध रोपण का समय सितम्बर है। इसका फूल औसतन 1.00 कि.ग्रा. तक होता है। इसका फूल बंधा हुआ, सुगठित एवं सफेद रंग का होता है। इसकी औसत उपज 150 से 175 कुन्तल प्रति हैक्टेयर होती है।

(स) पछेती किस्में

स्नोबाल–16– इसके फूल मध्यम आकार के ठोस एवं बर्फ के समान श्वेत रंग के होते हैं। रोपण के 90-110 दिन में फसल तैयार हो जाती है। इसके बीज की बुआई पौधशाला में अक्टूबर के प्रारम्भ में तथा रोपण मध्य नवम्बर तक करते हैं। इसकी फसल जनवरी से मध्य मार्च तक उपलब्ध रहती है। इसकी प्रति हैक्टेयर उपज 200 कुन्तल है।

पूसा स्नोबाल के–1 इसकी बाहरी पत्तियाँ फैलावदार तथा भीतरी पत्तियाँ फूल को ढँककर सुरक्षित

Downloaded from www.uphorticulture.gov.in
Internet Copy

नयी पत्तियाँ विकृत हो जाती है। इससे बचाव के लिए 1.50 कि.ग्रा. मालिब्डिक ऐसिड प्रति है. की
से देने पर गोभी के आकार, गुणवत्ता व विटामिन सी में वृद्धि होती है।

फसल की कटाई

जब गोभी का फूल जातीय गुण के अनुरूप पूर्ण आकृति व रंग ग्रहण कर ले तब पौधों की
करें। देर से कटाई करने पर रंग पीला पड़ने लगता है और फूल ढीले पड़ने लगते हैं जिससे बाजार मा
जाता है। गोभी को उखाड़ने की अपेक्षा तेज चाकू से जमीन की सतह से थोड़ा ऊपर से काट लेना
रहता है।

प्रमुख कीट

माहूँ– यह कीट हल्के पीले रंग का होता है। वयस्क कीट पंखदार और पंखरहित दोनों प्रका
पाए जाते हैं यह कीट हमेशा चूर्णी मोम से ढँके रहते हैं जो इनके हरे रंग को छिपाए रखती है। इस की
निम्फ व वयस्क, दोनों ही पौधों को नुकसान पहुँचाते हैं। यह गोभी के पत्तों पर हजारों की संख्या में
रहते हैं। इनका प्रकोप जनवरी व फरवरी में अधिक होता है जिससे पत्तियां पीली पड़ जाती है। माहूँ
शरीर से स्राव करते हैं जिसमें फफूँद का आक्रमण होता है एवं गोभी खाने या बिकने योग्य नहीं रह
इससे बीज वाली फसल को बहुत नुकसान होता है।

प्रबंधन

इस कीट के नियंत्रण के लिए मैलाथियान 1.5 मिली लीटर प्रति लीटर पानी में मिलाक
डाइक्लोरोवास 1 मिली लीटर प्रति लीटर पानी या इण्डोसल्फान 2 मिली लीटर प्रति लीटर पा
छिड़काव उपयोगी है। 4 प्रतिशत नीम गिरी के धोल किसी चिपकने वाला पदार्थ के साथ मिलाकर छिड
करें।

हीरक पृष्ठ कीट

इस कीट के सूंड़ी पत्तियों की निचली सतह पर खाते हैं और छोटे–छोटे छिद्र बना देते हैं
इनका प्रकोप अधिक मात्रा में होता है तो छोटे पौधों की पत्तियां बिल्कुल समाप्त हो जाती है जिससे पौ
जाते हैं।

प्रबंधन

- 25 वर्गमीटर गोभी की क्यारी के चारो तरफ मेंड़ पर चीनी पत्तागोभी को फसाने वाले फसल के
  में गोभी के साथ साथ रोपाई करना चाहिए। चीनी पत्तागोभी में डाईक्लोरोवास 1 मिली लीटर
  लीटर पानी में घोलकर छिड़क देना चाहिए जिससे कीट मर जाएं।
- 4 प्रतिशत नीम की गिरी का निचोड़ फसल पर छिड़कने से इस कीट का प्रकोप कम हो जाता है
- अगर इस कीट की प्रकोप बहुत ज्यादा हो तो पादान (कारटाप हाईड्रोक्लोराइड) का 1 मि.ली
  लीटर पानी की दर से 1 बार छिड़काव करना चाहिए।

तम्बाकू की सुड़ी (स्पोडौपटेरा)

वयस्क मादा कीट पत्तियों की निचली सतह पर झुण्ड में अण्डे देती हैं। 4-5 दिनों के बाद अण्ड
सूंड़ी निकलती हैं और पत्तियों को खाती हैं। सितम्बर से नवम्बर तक इसका प्रकोप अधिक होता है।

प्रबन्धन

- पत्तियों के निचले हिस्से पर गुच्छों में दिए गए अण्डों को पत्तियों से तोड़कर नष्ट कर देना चाहि
- फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर को पकड़कर खत्म कर देना चाहिए।
- एच. एन. पी. वी 250 से 300 एल. ई. एक किलो गुड़ व 0.01 प्रतिशत टीपोल का 800 लीटर प
  घोलकर 10 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें। अथवा

- इण्डोसल्फान (35 ई.सी.) 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से पन्द्रह दिन के अन्तराल पर छिड़काव इस कीट के नियंत्रण में लाभकारी है।

प्रमुख रोग

मृदु रोमिल आसिता

मृदु रोमिल आसिता (डाउनी मिल्डिउ) बीमारी, पौध से फूल बनने तक कभी भी लग सकती है। पत्तियों की निचली सतह पर जहां कवक तन्तु दिखते हैं उन्हीं के ऊपर पत्तियों के ऊपर सतह पर भूरे धब्बे बनते हैं जोकि रोग के तीव्र हो जाने पर आपस में मिलकर बड़े विक्षत बन जाते हैं।

प्रबंधन

- पूर्व फसल के अवशेषों को जलाकर खेत की सफाई, रोगमुक्त बीजों का चयन करें।
- मैन्कोजेब कवकनाशी के 0.25 प्रतिशत जलीय घोल (2.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी) को रोग की प्रारम्भिक अवस्था में पर्णीय छिड़काव एवं 6 से 8 दिन के अन्दर इसे दुहराना चाहिए।

पत्ती का धब्बा रोग

अल्टरनेरिया पर्णदाग, फूलगोभी में बढ़वार की प्रारम्भिक अवस्था में आता है। अल्टरनेरिया पर्णदाग निचली पत्तियों में ही आता है। इस रोग में पत्तियों पर गोल भूरे धब्बे बनते हैं। धब्बों में गोल छल्ले स्पष्ट दिखते हैं। बीज की फसल में पुष्पक्रम तथा कलियाँ भारी मात्रा में प्रभावित होती हैं और पैदावार कम हो जाते हैं।

प्रबंधन

- शाम के समय क्लोरोथैलोनिल कवकनाशी के 0.2 प्रतिशत जलीय घोल को स्टीकर के साथ मिलाकर एक बार छिड़काव करना चाहिए।
- स्वस्थ पौधों से ही बीज का चुनाव करें ताकि फली बनने के समय एक बार उपरोक्त दवा या मैकोजेब 0.25 प्रतिशत (2.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी) का प्रयोग करें।

सड़ेद गलन

फूलगोभी के फूल, पर्णवृन्त इत्यादि में जलीय मृदु गलन इसके लक्षण हैं।

प्रबंधन

- संक्रमित पुष्प वृन्त पत्तियों इत्यादि को थोड़े स्वस्थ भाग सहित सुबह के समय काटकर सावधानीपूवर्क इकट्ठा करें एवं खेत के बाहर ले जाकर जला दें।
- फूल आने की अवस्था में कार्बेण्डाजिम कवकनाशी के 0.1 प्रतिशत जलीय घोल (1.0 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव उसके बाद 0.25 प्रतिशम मैन्कोजेब का 0.1 प्रतिशत ट्राइट्रान के साथ मिलाकर छिड़काव करें।

काली गलन

रोग का प्रारम्भिक लक्षण 'V' आकार में पीलापन लिए होता है। रोग का लक्षण पत्ती के किसी किनारे या केन्द्रीय भाग में शुरू हो सकता है।

प्रबंधन

- स्ट्रेप्टोसाइक्लिन रसायन के 150 मिली ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के घोल द्वारा 30 मिनट तक बीजोपचार करें।
- स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 100 मि.ग्रा. प्रति लीटर एवं कॉपर आक्सीक्लोराइड 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी जलीय घोल के मिश्रण को 0.1 प्रतिशत चिपकने वाले पदार्थ के साथ मिलाकर भी प्रयोग करें।

Downloaded from www.uphorticulture.gov.in
Internet Copy